युद्ध से प्राप्त राजनैतिक एवं सैनिक शिक्षाएं अथवा भारत की पराजय के कारण -:

① इस युद्ध में भारतीय सेना की पराजय की जिम्मेदारी उनकी पुरानी सामरिकी थी क्योंकि हमारी सेनाएं सदैव सडकों के द्वारा चलती थी। जबकि चीनी सेनाएं सड़कों के अतिरिक्त अन्य मार्गों का उपयोग करके आगे बढ़ती थीं और कार्यवाहियां करती थीं।

② हमारी सेनाओं को जंगली एवं पहाड़ी क्षेत्रों में लड़ने के लिए उचित प्रशिक्षण नहीं प्राप्त था। जबकि अधिकांश सैन्य कार्यवाहियां ऊँचाई वाले क्षेत्रों में हुई थी 'नेफा' में सर्वप्रथम जो सेना भेजी गयी, उसमें बहुत से सैनिक मद्रासी थे। जो दक्षिण भारत के गर्म प्रदेश के रहने के अभ्यस्त थे जबकि चीनी टुकड़ियां गुरिल्ला युद्ध तथा पर्वतीय एवं ठंडे वातावरण में युद्ध करने में पूर्णत: सक्षम थी। ③ भारत की पराजय का एक मुख्य कारण उसकी अकुशल गुप्तचर व्यवस्था थी जिससे हम चीन की महत्वपूर्ण योजना का पता नहीं लगा पाते थे जबकि चीन हमारी अनेक सैनिक टुकड़ियों और राजनैतिक गतिविधियों को जान गया था।

④ इस युद्ध ने स्पष्ट कर दिया कि विजय श्रेष्ठ हथियारों पर निर्भर करती है, चीन की स्वचालित राइफलें, तोपखानें आदि की तुलना में 303 (थ्री नाट थ्री) राइफल से विजय की आशा करना असम्भव था। ⑤ संचार एवं आपूर्ति के साधनों की कमी थी जो भारत की पराजय का मुख्य कारण था। जैसा की जनरल बी॰एम॰ कौल द्वारा भेजे गये एक संदेश से स्पष्ट होता है -(A) हमारी वायुसेना द्वारा गिरायी गयी अधिकांश खाद्य सामग्री, गोला बारूद, सर्दी के कपड़े ऐसे दुर्गम स्थानों पर गिरते थे; जिन्हें हमारी सेनायें न पा सकी।

B-: इस कमान में स्थित राजपूत एवं गोरखा सेनाओं के लिए दो या तीन दिन की खाद्य सामग्री तथा एक सैनिक के पास केवल 500 गोलियां उपलब्ध हैं। हमारे अन्य हथियार अभी मध्य में ही हैं। (C) यहाँ की दोनों बटालियनों में जाड़े के कपड़ो का पूर्णत: अभाव है; और वे सिर्फ एक कम्बल के साथ गर्मी के कपड़ो में 15000 फीट की ऊँचाई पर हैं।

D-: यहाँ पर समान ढोने वाले नागरिकों की कमी है। वायुसेना द्वारा सामान गलत जगह गिरा देने के कारण समस्या और उत्पन्न हो जाती है (E) इस कार्य के लिए हमें कुछ अतिरिक्त वायुयानों की आवश्यकता है।

उपरोक्त बातें यह स्पष्ट करती है कि भारतीय सेनाओं के समक्ष उस क्षेत्र में की जाने वाली कार्यवाहियों में हथियारों की कमी, सड़कों का अभाव, सैनिक एवं साज सामान का अभाव, संचार एवं पूर्ति की अव्यवस्था तथा अकुशल नेतृत्व आदि अनेक समस्याओं ने बाधा उत्पन्न की। तत्कालीन भारतीय रक्षा मंत्री एस॰बी॰ चौहाण ने 2 सितम्बर 1963 को नेफा की हमारी कार्यवाही पर लोकसभा में अपने वक्तव्य के दौरान

7

कहा था कि हमारी असफलताओं मे प्रशिक्षण, हथियार, कमाण्डर प्रणाली, सेनाओं की सामरिक अव्यवस्था तथा सेनानायकों मे सैनिकों को प्रभावित करने की कला की कमी, यह प्रमुख थे

6-: इस युद्ध में हमारे राजनीतिज्ञों की अदूरदर्शिता स्पष्ट होती है। क्योंकि जब भारत पंचशील एवं हिन्दी, चीनी भाई-2 के द्वारा मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की दुहाई देने में लगा था। तब चीन ने अचानक आक्रमण कर दिया तथा युद्ध क्षेत्र में भारतीय सेना की तरफ लाउडीस्पीकरों द्वारा बार-2 यह नारा लगाया गया। "हिन्दी चीनी भाई-2 यह जमीन हमारी है। तुम वापस जाओ।"

7-: अपनी गुटनिरपेक्षता की नीति के कारण भारत को जो प्रतिष्ठा प्राप्त हो रही थी। उससे चीन द्वेष करता था। इस आक्रमण के द्वारा वह भारत को नीचा दिखाना चाहता था कि उसे उसकी गुटनिरपेक्षता की नीति सुरक्षा नही प्रदान कर सकती।